PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 2, ISSUE 4

हिंदी नुक्कड़ नाटकों में चित्रित सामाजिक व्यंग्य

प्रा. जगदीश राजाराम संग परदेशी
के. टी. एच. एम. महाविद्यालय,
नाशिक, महाराष्ट्र. **भारत**

मनुष्य अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए सदैव प्रयास करता रहता है। परंतु जीवन की तथा युगीन समाज की विसंगतियाँ सामने उपस्थित हो जाती हैं। इन परिस्थितियों की तीखी अभिव्यक्ति ही व्यंग्य कहलाती है। साधारण बोलचाल में व्यंग्य 'ताना' भी कहलाता है। अंग्रेजी में व्यंग्य को सटायर (satire) नाम से प्रयोग में लाया जाता है। साहित्य में व्यंग्य अभिव्यक्ति कला को ही वक्रोक्ति कहा जाता है। साहित्यिक आधार पर व्यंग्य के कई अर्थ दिए जाते है। संस्कृत के आचार्यों ने व्यंग्य का अर्थ दिया हैं–''वि उपसर्ग पूर्वक अञ्ज धातु है, व्यत् प्रत्यय के योग से उत्पन्न हुआ षब्द है, जिसके अनेक अर्थ हैं– विविक्षा के द्वारा निर्देष, गुढ़ अथवा अप्रत्यक्ष इंगित के द्वारा निर्देष, संकेतित अर्थ और षब्द की तीसरी षक्ति व्यंजना द्वारा निर्दिष्ट अर्थ''[1] अर्थात व्यंग्य की अभिव्यक्ति प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष व्यक्ति के संदर्भ में तथा उसकी चेतन क्षमता पर आधारित होती है।

ऑक्सफोर्ड इंग्लिष डिक्षनरी के अनुसार ''साहित्यिक विधा के रूप में व्यंग्य पद्यात्मक अथवा गद्यात्मक रचना है, जिसमें तत्कालीन प्रचलित त्रुटियों, दोषों, विद्रुपताओं अथवा मूर्खताओं का यदा–कदा अतिरंजना के साथ मजाक उड़ाया गया हो। कभी–कभी इसका लक्ष्य व अभीष्ट किसी व्यक्ति विषेष अथवा वर्ग अथवा व्यक्तियों के समुह की मूर्खताओं का उपहास उड़ाना होता है।''[2] अर्थात उपहास तथा व्यंग्य के माध्यम से समाज के यथार्थ को प्रस्तुत किया जाता है। हरिषंकर परसाई व्यंग्य के बारे में कहते है कि ''व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखंड़ों का पर्दाफाष करता है, जीवन के प्रति व्यंग्यकार की उतनी ही निष्ठा होती है जितनी गंभीर रचनाकार की, बल्कि ज्यादा ही वह जीवन के प्रति दायित्व का अनुभव करता है। जिंदगी बहुत जटिल चीज है, अच्छा व्यंग्य सहानुभूति का सबसे उत्कृष्ट रूप होता है।''[3] जीवन से संबंधित सभी विषयों पर व्यंग्य किया जाता है। जैसे समाज में व्याप्त षोषण, अन्याय, अत्याचार, दहेज परंपरा, महंगाई, भ्रष्टाचार, रिष्वतखोरी, साम्प्रदायिकता आदि विषयों पर साहित्यकार तथा समाजसुधारक व्यक्ति व्यंग्य करते आए है। समाज में फैली राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा षैक्षणिक विकृतियों की पोल खोलने के लिए व्यंग्य आवष्यक होता है। सामाजिक विषमताओं के अभिव्यक्ति के लिए भी व्यंग्य उत्तम मार्ग है। साहित्य यह कार्य प्राचीन समय से करता आया है। साहित्य विधाओं में नाटक इस विधा का योगदान सराहनीय रहा है। नाटक विधा में नुक्कड़ नाटकों ने अपने उत्तरदायित्व को ध्यान में रखते हुए, व्यंग्य के माध्यम से लोगों में जनजागृति निर्माण की है। वैसे नुक्कड़ नाटक साहित्य की नई विधा हैं। जिसमें लोकनाट्य तथा आधुनिक नाटकों के तत्वों का मेल हुआ है। इस नई विधा ने आधुनिक समाज को काफी प्रभावित कर व्यंग्य के माध्यम से संघर्ष और परिवर्तन के लिए प्रेरित किया है। 'नुक्कड़ नाटक' का अर्थ इस प्रकार दिया जाता है।

हिंदी व्युत्पत्तिकोष में नुक्कड़ का अर्थ दिया है–''नुक्कड–् (नुक्का) अ–अणुक्कअ= अणुक्कड़ है। अर्थात नुक्कड़ (अपभ्रंष में संस्कृत के स्वार्थिक 'क' प्रत्यय का लोप होता है और उसके लिए तीन प्रत्यय 'अ', 'डड', 'डुल्ल' होते है।)''[4] अर्थात नुक्कड़ षब्द अपभ्रंष की देन है।

मानक हिंदी कोष के अनुसार– नुक्कड़ –पु (हिं. नोक) 1. नोक की तरह आगे निकला हुआ कोना या सिरा 2. कोना 3. मकान गली या रास्ते का वह अंत या सिरा जहाँ कोई मोड़ पडता हो।''[5] अर्थात नुक्कड़ का अर्थ यहाँ स्थान से लिया गया है।

हिंदी षब्द सागर के अनुसार नुक्कड़ के तीन अर्थ है– ''नुक्कड़ –संज्ञा पु (हिं. नोक का अल्पा) 1. नोकः पतला सिरा 2. सिरा, छोर, अंत जैसे गली के नुक्कड़ पर वह दूकान है। 3. कोना। निकला हुआ कोना।''[6] यहाँ नुक्कड़ को विषिष्ट स्थान के लिए प्रयोग किया है। अर्थात नुक्कड़ वह स्थान होता है जहाँ किसी गली या मौहले का सिरा या नोंक या वह जगह जहाँ कई रास्ते आकर मिलते हैं। जहाँ पर आम लोग आकर कुछ देर के लिए रुक जाते है। वह चौराहा जहाँ बिना किसी भेद–भाव के तथा विभिन्न कामकाजी लोग बैठते है, या रुकते है। वह जगह नुक्कड़ कहलाती है। नाटक का सामान्य अर्थ होता है– अभिनय करनेवाला नट या नर्तक, अनुकरण करनेवाला तथा हाव–भावों, विभिन्न मुद्राओं, कार्य या चरित्रों द्वारा कला का प्रदर्षन करनेवाला खेल नाटक कहलाता है। इस आधार पर नुक्कड़ नाटक का अर्थ होता है– वह खेल या नाटक जो बीच रास्तों पर खुले मैदानों में, चौक में, गली में, सड़क पर विषेष उद्देष्य से खेला जाता है, उसे नुक्कड़ नाटक कहते है।

डॉ. गिरीराजषरण अग्रवाल के अनुसार ''जिन नाटकों को हम नुक्कड़ नाटकों का नाम देते हैं, वे सर्वप्रथम तो समस्त रंगमंचीय ताम–झाम और साज सज्जा से मुक्त होते हैं। साथ ही उनकी भाषा सरल तथा आम लोगों के सांस्कृतिक स्तर से जुड़ी होती है, तीसरे उनमें पूरा बल संवाद और अभिनय पर दिया जाता है, दृष्यों पर नहीं अत्यधिक संक्षेप में कहना चाहें तो हम यह भी कह सकते हैं कि नुक्कड़ नाटक भारतीय जनता की सामाजिक एवं वास्तविक भावनाओं की अभिव्यक्ति भर हैं।''[7] – अर्थात ताम–झाम से मूक्त, आम लोगों की भाषा से युक्त, संवाद और अभिनय के द्वारा वास्तविक भावनाओं की अभिव्यक्त करनेवाली विधा अर्थात नुक्कड़ नाटक है। इस तरह नुक्कड़ नाटक की पूरी प्रक्रिया को पारिभाषित करने का प्रयास किया गया है। नाटक की ऐसी विधा उसे माना गया है, जो किसी गली, चौराह, चौक या सड़क, स्कूल, कॉलेज के मैदानों में खेले जानेवाला तथा जिसका उद्देष्य आम लोगों को अपने जीवन से जूड़ी समस्याओं से अवगत कराना होता है। प्रस्तुत नाटकों में समसामायिक समस्याओं का जिसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और षैक्षणिक क्षेत्रों से संबंधित समाज की विषमताओं पर व्यंग्य के माध्यम से गहरा प्रहार किया जाता है। षोषित जनता को उनके अधिकारों के बारे में जगाया जाता है। इन नाटकों द्वारा जनता को संघर्ष के लिए खड़ा किया जाता है।

समाज की किसी व्यवस्था पर, परंपराओं पर व्यंग्य करना या कसना आसान नहीं होता हैं। मूलतः अध्ययन और अनुभूतियों के द्वारा यह कार्य संपन्न कराया जाता है। व्यवस्था में आई खामियों, को देखते हुए व्यंग्य किया जाता है। नुक्कड़ नाटक विसंगत स्थितियों की पहचान करते हुए अपने निश्चित उद्देश्य की पूर्ति कराने में सफल होते है। हिंदी नुक्कड़ नाटकारों ने अपने नाटकों के माध्यम से इस सामाजिक व्यंग्य को चित्रित इस प्रकार से चित्रित किया है। 'रंग सियार' नाटक में भारतीय राजनीति में मची हुई लूट को गीत के माध्यम से अभिव्यक्त किया है –

''होशियार!
लूट मची है, फूट मची है

लूटने की हर छूट बची है
मंत्री लूटे, संतरी लूटे
जनता के तो भाग ही फूटे
यही है देश का समाचार
होशियार!''[8]

राजनीतिक व्यंग्य को अभिव्यक्त करते नुक्कड़ नाटककारों ने मंत्रियों द्वारा ही देश किस प्रकार से लूटा जाता है, उसे प्रस्तुत किया है। भ्रष्टाचार के आरोप आम व्यक्तियों पर नहीं बल्कि पढ़े लिखे तथा संसद में बैठे लोगों पर लगे हैं। संसद से लेकर सरकारी व्यवस्था के अंतीम स्तर पर कर्मचारियों की ओर से आम व्यक्ति की लूट हो रही हैं। यहाँ तो केवल जनता का ही भाग्य फूटा हुआ है। आज भारत में कई किसान आत्महत्या कर रहे हैं। परंतु उन किसान की समस्याओं को सुननेवाला कोई नहीं है। उनके आत्महत्या के लिए जिम्मेदारी कौन है? इस व्यंग्य को भी 'चौदह दिन की हवालात' नामक नुक्कड़ नाटक में इस तरह प्रस्फुटित किया हैं –''अरे यार खचेडूसिंह, आत्महत्या की खबरों में अब कोई अनोखापन नहीं रहा। आंध्रप्रदेश में कितने ही किसानों ने सामूहिक आत्महत्या की। किसी के कान पर जूं नही रैंगी, पंजाब के सरकारी ऋण में बँधे कितने ही किसानों ने आत्महत्या की, तब किसी के कान पर जूँ नहीं रैंगी। आत्महत्या वाली घटनाओं में अब चौंकाने वाली बात नहीं रही है।''[9] अर्थात किसी के प्राण चले जाना अब उतना महत्वपूर्ण नहीं रहा है। सरकार की ओर से इन आत्महत्या करनेवाले लोगों के प्रति साहनुभूति नहीं रही हैं। मदत तो बहुत दूर की बात हो गई है। धनी वर्ग, माफियाँ तथा गुंडो के माध्यम से समाज को ठगा जाता है। जिसकी सजा आम आदमी को भूगतनी पड़ती है। 'भ्रष्टाचार समर्थक मोर्चा' नुक्कड़ नाटक द्वारा देश में किस प्रकार भ्रष्टाचार किए जाते है और भ्रष्टाचार करनेवाले अपने आपको किस प्रकार बचा लेते है, इसका चित्रण किया गया है। ठाकूर मूलचंद जो शराब का व्यवसाय करता था। उसने पैसों के बल से बहुत कुछ खरीद लिया था। वह माफिया गिरोह का मुखिया भी बन गया था। लेकिन लोगों में उसकी कोई इज्जत नहीं रही थी। पीठ–पीछे उसे शराब माफिया नाम से पुकारा जाता था तब इस माफिया ने मंदिर बनाकर पुण्य कमाने की योजना बनाई। इस सामाजिक व्यंग्य को इस प्रकार अभिव्यक्त किया है– ''वे पीठ–पीछे हमें शराब माफिया के नाम से पुकारते हैं। यह सब देखकर, बहनों और भाईयों हमें तुरंत सद्बुध्दि आई और हमने हाथों–हाथ एक अनाथ–आश्रय और अनाथ–आश्रय के सामने शिवजी का भव्य मंदिर बनाने की घोषणा कर दी। हमने कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं को पैसे देकर इर प्रचार पर लगाया कि ठा.मूलचंद अब पुराने धंधे को छोड़कर साधू संतों में शामिल हो चुके है।''[10] अर्थात भ्रष्टाचार करनेवाले यह लोग अपनी पहचान छुपाने के लिए धर्म के नाम पर, अच्छे कर्म के नाम पर भ्रष्टाचार का पैसा खर्च करते है। एक ओर लोगों को रहने खाने पीने के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध नहीं होती है। तो दूसरी तरफ भ्रष्टाचार द्वारा तथा कालाबाजारी द्वारा कमाएँ पैसों से पुण्य कमाया जाता है। यही समाज में व्याप्त व्यंग्य है।

भारत में कई ऐसे परिवार है, उन्हें रहने के लिए घर नहीं है; वह सब बेघर होते है। ऐसे बेघर लोग अपना जीवन रेल स्टेशनों पर गुजार देते है। इनके यथार्थ का चित्रण नुक्कड़ नाटककारों ने किया है। रेल्वे प्लेटफार्म का उपयोग कई सारे लोग अपनी रात बिताने के लिए करते है। इससे बड़ी ओर क्या बात हो सकती है। 'रेल्वे प्लेटफार्म' नाटक का यह दृश्य

''सुखपाल : तू ठिक कह रहा है जुगाड़ी! इस बच्चू को लग रहा है कि प्लेटफार्म पर सारे–के–सारे यात्री पड़े हैं। तुझे नहीं पता मुन्नालाल कि इनमें पिछत्तर प्रतिशत लोक यात्री नहीं है।

कंदूरीलाल : (आश्चर्य से) यात्री नहीं है, तो फिर कौन है?
जुगाडीसिंह : (हँसकर) अबे मुन्नालाल, ये तो वे हैं, जिन्होंने अपने जीवन में कभी यात्रा की ही नहीं। ये तो प्लेटफार्म पर रात गुजारने आते हैं, सोने आते हैं यहाँ। क्योंकि इनके पास सोने की कोई और जगह नहीं है।''[11]

इस प्रकार यह भारतीय व्यवस्था का ही व्यंग्य है कि एक और प्रमुख जरूरतों को मनुष्य पुरा नहीं कर सकता तो दूसरी ओर धन का खर्च कहाँ किया जाए यह प्रश्न निर्माण हुए कई सारे व्यक्ति भी है। कालबाजी, रिश्वतखोरी करनेवाले तथा चापलुसी करनेवाले अफसर भी इस व्यवस्था में बहुत है। 'रमेश उपाध्याय' ने अपने 'गिरगिट' नामक नुक्कड़ नाटक के माध्यम से रंग बदलनेवाले ऐसे अफसरों को उजागर किया है, उनकी चापलुसी उन्हें किस प्रकार और बड़ा अफसर बनाती है। इसका चित्रण नाटक में किया है। वह ऐसे एक बड़ा अफसर बाजार में घूमता है, तब एक बच्चे को कुत्ता काट लेता है। कुत्ता किसका है? खोज करने के बाद पता चलता है कि यह कुत्ता सेठ जी का है तब वह अफसर गिरगिट के भाँति रंग बदलता है। कुत्ते को सही सलामत शेठ के घर छोड़ दिया जाता है। और जिस लड़के को वह काटा था उसे भगा दिया जाता है। इस व्यंग्य को इस प्रकार उजागर किया है–

''मोटा अफसर :(छोटा अफसर से) रामसिंह, कोट मुझे दो और कुत्ते को जरा ठीक से देखो। ये कहते हैं, सेठजी का है। (छोटा अफसर कुत्ते का निरीक्षण करता है, मोटा अफसर कोट फिर पहन लेता है) रामसिंह, तुम ऐसा करो कि इसको सेठजी के यहाँ ले जाओ और वहाँ मालूम करो। अगर कुत्ता उनका हो तो मेरा नाम लेना और कहना कि सड़क पर दिखाई दे गया था और मैंने वापस भेजवाया है।''[12]

अर्थात मनुष्य से जादा कुत्ता महत्वपूर्ण है। एक व्यक्ति को कुत्ते ने काँट लिया तो भी कोई बड़ी बात नहीं है। समाज की इस विकृत मनोदषा पर नाटक के माध्यम से व्यंग्य कसा गया है। किस तरह चापलूसी से लोग आगे बढ़ते है। सरकार भी ऐसे ही चापलुसी करनेवाले लोगों द्वारा घिरी हुई है। अब तो सरकार कॅपिटलिस्ट के आधीन हो गई है। जन नाट्य मंच ने 2015 के चुनाव पर नुक्कड़ नाटक लिखा है। जिसका नाम है 'नाटक 56 छाती का'। विकास की राजनीति किस प्रकार से कैपिटलिस्ट के लिए ही काम करती आई है, इसका उदाहरण नाटक प्रस्तुत करता है। आम व्यक्ति, किसान, आदिवासी आदियों से उनके अधिकार तथा उनकी जमीन, पैसे किस तरह छीन लिए जाते हैं इस व्यंग्य को प्रकाषित किया गया है।

''कैपिटलिस्ट :इस जंगल के नीचे हैं– कोयला, लोहा, बॉक्साइट और जमीन के ऊपर मॉल्स और स्मार्ट सिटीज। इतनी बड़ी–बड़ी चीजों की जिम्मेदारी बेचारे गरीब आदिवासी और किसान कैसे ले सकते है?
56 छाती : हां, बेचारे हमारे किसान और वनवासी भाई। इनके छोटे–छोटे, नाजुक कंधे इतनी बड़ी जिम्मेदारी कहां ले पाएंगे। इसके लिए तो चाहिए आपके जैसे कारर्पोरेट और मजबूत कंधे। तो जंगल और जमीन का अधिकार आपका हुआ।''[13]

अर्थात राजनीतिक पार्टियाँ तथा सरकार अपने अधिकारों का फायदा आम लोगों को नहीं बल्कि व्यापारी, उद्योगपतियों, देश के कैपिटलिस्ट को पहूँचाते हुए अपनी राजनीति चलाते है।

बदले में अपने पार्टी के लिए धन की माँग करते है। कैपिटलिस्ट को सरकार की ओर से कर्जा आसानी से दिया जाता है। एक ओर किसान आत्महत्या करते है। सरकार उनके लिए कोई स्थाई प्रबंध नहीं करती यही भारतीय समाजिक व्यवस्था का व्यंग्य है।

इस प्रकार हिंदी नुक्कड़ नाटकों में सामाजिक व्यंग्य को अभिव्यक्त किया गया है। जिसका उद्देष्य समाज व्यवस्था में व्याप्त पाखंड को सबके सामने लाना है। व्यंग्य ही वह औजार है, जो लोगों के हृदय में चुभता है। प्रतिक्रिया स्वरूप लोगों को अपने अधिकारों के बारे में जागृत करता है। समाज में व्याप्त बुराई को खत्म करने का पूरा प्रयास किया जाता है। व्यंग्य में वह मनोविज्ञान प्रविधि समाई हुई है, जो हिंदी की कहावत को चरितार्थ करती है–'सॉप भी मरे और लाठी न टूटे'। इस प्रकार हिंदी नुक्कड़ नाटकों ने व्यंग्य के माध्यम से समाज सुधार का कार्य आगे बढ़ाया हैं।

संदर्भ ग्रंथ–

1. डॉ. षेरजंग गर्ग, हिंदी स्वातंत्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य, पृ. 22
2. डॉ. सुरेष माहेष्वरी, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्य का मूल्यांकन, पृ 28
3. हरिषंकर परसाई, सदाचार का तावीज, पृ. 10
4. हिंदी व्युत्पत्तिकोष, खंड 3, सं. आ. बच्चुलाल अवस्थी, पृ. क्र. 1796
5. रामचंद्र वर्मा, मानक हिंदी कोष, तीसरा खंड, पृ. क्र. 319
6. ष्यामसुंदर दास, हिंदी षब्द सागर, पंचम भाग, पृ. क्र. 2720
7. डॉ.गिरिराजशरण अग्रवाल, ग्यारह नुक्कड़ नाटक, पृ.क्र. 11
8. राजेश कुमार, पाँच नुक्कड़ नाटक, पृ.क्र.78
9. डॉ.गिरिराजशरण अग्रवाल, ग्यारह नुक्कड़ नाटक, पृ.क्र.35
10. वही, पृ.क्र. 23
11. वही, पृ.क्र.117
12. संपादन, राजेश कुमार, कोरस का संवाद, पृ.क्र.59
13. जनम, सरकश अफसाने, जनम के चुनींदा नुक्कड़ नाटक, पृ.क्र.317